IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निम्नमध्यवर्गीय बोध और कामतानाथ की कहानियाँ

डॉ0 अनुश्री त्रिपाठी
राजा एस0पी0 सिंह डिग्री कॉलेज,
ग्वालियर रोड, इटौरा, आगरा।

सारांष

कामतानाथ सत्तर के दशक के प्रेमचंद की प्रगतिवादी विचार धारा का अनुकरण करने वाले कहानीकारों में प्रमुख हैं। कामतानाथ की कहानियाँ जीवन के गहरे सरोकार से प्रेरित है। कामतानाथ की कहानियों पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। निम्नमध्यवर्ग का आर्थिक असंतोष, वर्ग जनित पीड़ा और कुठित मानिसकता कामतानाथ की कहानियों का प्रमुख बिंदु रहे हैं। निम्नमध्यवर्गीय चेतना कामतानाथ की कहानियों का प्राण है। कामतानाथ की कहानियों का विषय, पात्र, शिल्प, वातावरण सभी कुछ जीवन के कठोर, विदूप यथार्थ से चुना गया है जहाँ कल्पना और बना बटीपन के अलंकारों का अभाव है। कामतानाथ के लेखन विचारों में की गहराई और सूक्ष्मता जीवन संदर्भो के प्रति उनके सरोकारों को स्पष्ट करते हैं। कामतानाथ के लेखन में प्रतिबृद्धता इसी से स्पष्ट हो जाती है कि अलंकार कामतानाथ साहित्य उनके स्वयं के भोगें हुए यथार्थ से प्रेरित साहित्य है जिसमें जीवन की कटुता निम्नमध्यवर्गीय टूटन और उदासीनता ट्रेड यूनियन द्वारा मजदूरों के अधिकारी के लिए संघर्ष, राजनीतिक निराशा : आर्थिक तंगी, कुण्ठा, परम्परागत स्थितियों के प्रति आस्था, पुराने के प्रति मोहभंग और नए के पूर्ति आकर्षण अधंविश्वास, आतंकवाद कटास और इन सबके बावजूद जीवन के प्रति आस्था और संघर्ष कामतानाथ के साहित्य की प्रमुखता है जो उनके साहित्य को महत्वपूर्ण बनाती है। अतः हम कह सकते है कि कामतानाथ का साहितय निम्नमध्यवर्गीय चेतना से युक्त गम्भीर साहित्य है जो हिंदी कथा साहित्य में अपनी प्रामाणिक और प्रांसगिक उपयोगिता से उसे समृद्व करता है।

प्रस्तावनाः– कामतानाथ नवें दशक के उन कहानीकारों में विषिष्ट हैं जिनका साहित्य अपनी यथार्थवादी मौलिक दृष्टि के लिए जाना जाता है। कामतानाथ का साहित्य स्वतंत्रता के पष्चात् समाज में होने वाले सामाजिक राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक परिवर्तन का जन्म के जीवन में होने वाले स्वयापक प्रभाव की समग्रता से पड़ताल करता है। स्वत्रतंता के पष्चात् समाज एक बड़े परिवतर्न का सामना कर रहा था। जहाँ नवीन परिस्थितियों से समायोजन कर विकास के नए मार्ग तलाषने थे वहीं लम्बे समय से पराधीन की बेड़ी में जकड़े देष की जड़ों में व्याप्त समस्याओं से मुक्ति के लिए संघर्ष भी करना था। पं0 जवाहर लाल नेहरू अपनी पुस्तक स्वाधीनता और उसके बाद में लिखते हैंः– "अपनी दीर्घकालीन पराधीनता और विष्वव्यापी युद्ध और उसके परिणामों ने हमारे आगे बहुत सी आवष्यक समस्याओं को एक साथ डाल दिया है। आज हमारी जनता के लिए भोजन, वस्त्र और आवष्यक वस्तुओं को तुरन्त हल नहीं कर सकते, साथ ही उनके हल करने में देर भी नहीं लगा सकते।"

यहाँ सामान्य या सतही समस्याओं से नहीं बल्कि नकारात्मक, पतनोन्तुख और शोषण से टूटी हुई मानसिकता से भी था। जहाँ निराषा के अंधकार में डूबा व्यक्ति स्वतंत्रता के खुले आकाष में उड़ने के लिए तड़प रहा था। लेकिन अभी उनके टूटें पंखो में नयी जीवनी शक्ति का संचार होना शेष था। यहाँ यह कहना अतिष्योक्ति नहीं होगा कि इन सभी परिस्थितियों में निम्न मध्य वर्ग ही सर्वाधिक प्रभावित था, क्योंकि यही एक वर्ग ऐसा था जो नवीनता को अपनाना तो चाहता था किन्तु पुरानी परम्परागत मान्यताओं और धारणाओं के प्रति अपनी आस्था के आगे विवष था।

इस सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव कथा साहित्य पर भी गहरा पड़ा। कथा साहित्य में कई आंदोलनों ने जन्म लिया जिसमें पहली कड़ी प्रगतिवादी विचारधारा की रही। जिसकी गूंज प्रकारान्तर से लम्बे समय तक साहित्य में परिलक्षित होती है।

कामतानाथ प्रगतिवादी विचाराधारा को अपनाने वाले समकालीन लेखकों में गिने जाते हैं। जो अपने गहरे सामाजिक सरोकार में साहित्य को समृद्ध करते हैं। उनका साहित्य उनके स्वानुभव की गम्भीरता से युक्त एक परिपक्व लेखन है। जिसमें सामाजिक सर्वोकार के साथ ही वैयक्तिक स्वतंत्रता का संघर्ष भी विद्यमान है। कामतानाथ स्वंय कहते हैं कि "मेरे साहित्य में मेरे जीवन और जीवनानुभवों के अंषों की स्पष्ट झलक मिलती है" – कामतानाथ से बातचीत के आधार पर यथार्थवादी अभिव्यक्ति की प्रबिद्धता ही उनके लेखन की प्रमाणिक बनाती है। अनुभव की प्रमाणिकता को रेखांकित करते हुऐ वर्षादास लिखती हैं। "अस्सी के बाद की कहानियों में एक जो बड़ा परिवर्तन दिखायी देता है वह यह है कि कहानियाँ मात्र विचारधारा से अर्जित दृष्टि के बूते पर अपनी पहचान बनाने को लालायित नही हैं, उसमें उसने अनुभवकों के प्रति भी भरोसा है।"

निम्नमध्यवर्ग कामतानाथ को कथा साहित्य का आधार है। निम्न मध्यवर्गीय परिवेष में जन्मे और पले बढ़े कामतानाथ की उसके प्रति आस्था और प्रतिबद्धता उनके लेखन में सवर्त्र परिलक्षित होती है। यहाँ यह कहना उचित ही होगा की कामतानाथ से आक्षादित व्यक्तित्व है। कामतानाथ के जन्म से संबन्धित टिप्पणी करते हुए बलराम अपनी पुस्तक 'समकालीन हिन्दी कहानी' में लिखते हैंः– 'अपनी कहानियों में कामतानाथ ने

सामाजिक पाखण्ड और ऋषियों की धज्जियां उड़ायी हैं, पर उनका जन्म तथा नाम अंधविष्वासों के धागों से बंधा हुआ है। .....कामदगिरि की परिक्रमा से प्राप्त अपने उस पुत्र का नाम माँ ने कामतानाथ रख दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि कामतानाथ से निम्नमध्यवर्गीय संस्कार बीज रूप में विद्यमान है। जो उनके लेखन को प्रभावित और प्रेषित करते हैं।

कामतानाथ ने सन् 1961 से 'मेहमान' कहानी से लेखन प्रारम्भ किया जो कि 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की विषाल परिधि तक विस्तार पाता है। इस बीच कामतानाथ के छः कहानी संग्रह प्रकाषित हुए। कामतानाथ के सभी कहानी संग्रहों का एक संकलन भी प्रकाषित हुआ हैः— सम्पूर्ण कहानियाँः कामतानाथ। कामतानाथ की कहानियों पर जब दृष्टिपात करो तो प्रथमतः जो वस्तु उभर कर आती है वह शहरी निम्न मध्यवर्गीय परिवेष की कुरित, संकुचित, उदासीन, यांत्रिक और अंर्तमुखों शहरी निम्नमध्यवर्ग की परिवेष का वस्तुगत वर्णन करते हुए कामतानाथ अपनी कहानी छुट्टियाँ में लिखते हैंः—"उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर देखा पाइप के पास वाली दीवार पर काई जमी थी। आंगन के जंगले के किनारे वाला सरिया टूटकर मगर के मुंह की तरह ऊपर उठ आया था। छत की मुडेर की ईंटे अभी भी टूटी हुई थी। कमरें की खिड़की क दरवाजा आधा टूटा हुआ था।"

अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता और यथार्थता का यही तत्व कामतानाथ की विषिष्टता है जो उनके लेखन को प्रामाणिक बनाता है। जब बात वर्ग विषेष की होती है तो आर्थिक स्थिति का चित्रण महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वर्ग भेद का आधार अर्थ ही है। निम्न मध्यवर्ग की विषिष्टता उसकी विषम आर्थिक स्थिति है जो अन्य तमाम समस्याओं का केन्द्र बिन्दु है। कामतानाथ की कहानियों में भी यह अपनी विषेषता में प्रकट हुई है—"पिता को रिटायर हुए चार—पाँच वर्ष हो चुके थे। फण्ड का सारा पैसा बहन की शादी में निकल गया था। जैसे—तैसे उसने एम0ए0 किया था। पिता ने किसी प्राइवेट फर्म में नौकरी कर ली थी। वह स्वंय पढ़ने के साथ—साथ ट्यषनें करता था। तीन—चार ट्यषनें करता था एक साथ। उस पर भी घर का खर्च नहीं चलता था।"

शहरी निम्नमध्यम वर्ग में व्याप्त आर्थिक तंगी ही तमाम विसंगतियों की जड़ है। इसी तथ्य को केंद्र में रख कामतान्ध विविध समस्याओं को कहानी का विषय बनाते हैं। कुण्डा, त्रास, अभाव, अवसाद, राजनीतिक असंतोष, संघर्ष, संबंधों में विघटना, उदासीनता, मानसिक द्वन्द, अकेलापन, विकृत सेक्स, आंतकवाद, परिवारों में विघटन धार्मिक पाखण्ड, विवाहेतर संबंध इत्यादि प्रमुखता से कामता नाथ की कहानियों में चित्रित है।

आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न अवसाद किस प्रकार व्यक्ति के जीवन से सुख के क्षण चुरा लेता है कामतानाथ की कहानी 'समझौता' में प्रकट हुआ हैः— ''बच्चों का रोना सुनकर उसे मेहमानों पर गुस्सा आने लगा था। अभी कल दिन में उसने माँ को पिता से कहते सुना था कि राशन दो—तीन दिन में समाप्त हो जाएगा।''

पारिवारिक विघटन निम्नमध्यवर्ग की बड़ी समस्या है। संयुक्त परिवार तो आज के शहरी परिवेश में अपवाद ही रह गये हैं — '' भाभी का कमरा जैसे सारे घर से अलग है रीता कभी बिना जरूरत उनके कमरे

में नहीं जाती। उसी समय का भइया और भाभी का एक साथ लिगाया फोटो भी लगा है। इसी की एक छोटी कॉपी रीता न जाने कितने दिनों अपनी पुस्तकों में दबाये रहती थी। अब वह कहीं खो गई है।''[8]

भावनाओं का उतार–चढ़ाव, संवेदना और असंवेदना की परिस्थिति जन्य स्वीकार्यता कामतानाथ की कहानियों में चित्रित होती हैं। जहाँ आर्थिक विषमा संबंधों में विघटन और पलायन को प्रेरित करती है। वहीं बेबसी और असमर्थता से हुई टूटन व्यक्ति को संवेदना की पराकष्ठा होती है। जहाँ 'शवयात्रा से पहले' कहानी में पिता की मृत्यु के पश्चात् कथानायक की असंवेदनशलीता पाठक को गहरे झकझाोरती है वहीं अत्योष्टि में माँ के मृत्यु के पश्चात् माता के स्नहें और स्वंय की असमर्थता से उत्पन्न आत्मग्लानि नायक के ह्रदय में संवेदना का उफान ही ले आती है। बलराम लिखते हैंः– ''अंत्योष्टि में इस निम्न मध्य वर्ग के एक–एक सपने और आकांक्षा को टूटने की आवाज को साफ–साफ सुना जा सकता है। इसमें ने तो चौंकाने वाली घटनायें है और नहीं बनावटी संवाद। लेखक ने बड़ी सादगी से इस कहानी का ताना–बाना बुना है। अश्रु विगलित भावुकता की तमाम स्थितियों के बावजूद कामतानाथ उनसे लगभग निस्संग रहे हैं।[9]

शहरी निम्नमध्यवर्म में जीवन की यांत्रिकता व्यक्ति की मानसिक स्थिति को किस सीमा तक प्रभावित कर सकती है कामतानाथ को कहानी संक्रमण–1 में वित्रित हुआ है कहानी का मुख्य पात्र शहरी जीवन के एकांकीपन और धात्मेकेंद्रिता की प्रवृत्ति के कारण अनिद्रा नामक मनोरोग से पीड़ित हो जाता है।– '' आप जानते हैं मैं रात बिलकुल नहीं सोया हूँ। और आपको बताऊँ मैं पिछले तीन वर्षो से बिलकुल नहीं सोया हूँ।[10] इसी प्रकार 'एक और मौत' कहानी में भी मनोरोगी पात्र के द्वारा कामतानाथ निम्न मध्यवर्गीय जीवन का त्रास व्यक्त करते है।

कामतानाथ कम्यूनिस्ट थे। वे कम्यूनिस्ट पार्टी के मैम्र भी रहे। साथही बैंक में कार्यरत रहते हुए वे ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष भी रहे और जेल भी गए। 'छुट्टियां' कहानी में स्वयं लेखक लिखता है– पहले जब स्वतंत्रता नहीं मिली थी तब जीवन मामा कांग्रेस की बड़ी तारीफ करते थे। स्वतंत्रता मिलने के बाद कांग्रेस की बुराई करने लगे हैं।

राजनीति से उनका गहरा जुड़ाव था जो उनकी कहानियों में मुख्य रूप से उभी कर आया है। निम्न मध्यवर्गीय शहरी जीवन राजनीतिक उथल–पुथल और गतिविधियों से कितना गहरे प्रभावित हो सकता है उनकी कहानियों में देखा जा सकता है। 'युद्ध', 'कुछ होने तक', 'पूर्वाह में', 'आत्मरचना' इत्यादि उनके सामाजिक और राजनीतिक सरोकार के विविध आयामों में प्रकट किया है। 'आत्मरचना' से एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है। लेखक अपने ट्रेड यूनियन के अनुभवों को वर्णित करता है– '' आज भी यदि मुझे दुबारा जेल जाना पड़े तो मुझे गम नही होगा। हाँ, मन में कहीं यह इच्छा जरूर है कि व्हाइट कालर ट्रेड यूनियन अपनी सुविधा परस्ती छोड़कर देश की वास्तविक समस्याओं, समाजवाद की स्थापना और आर्थिक नवनिर्माण के लिए समर्पित हो सके तो कितना अच्छा हो।''[12] यहाँ कहानियों में राजनितिक आर्थिक असंतोष से उपजा संघर्ष है और उचित परिणाम न मिल सकने पर आंतकवाद जैसी परिजाति भी है। जहाँ कामतानाथ के पात्र लेनिन, मार्क्स और माओ के विचारो से प्रभावित भी होते है। वहीं विसंगतियों और महत्वकांक्षाओं की भेंट चढ़ उन

विचारों सें पददलित भी हो जाते हैं। इनसे उत्पन्न व्यक्तिा बोध अवसाद और कुण्ठा के रूप में प्रकट होता है।

कामतानाथ साहित्य के जनसाधरण से जोड़कर ही उसकी सार्थकता को झांकते है। ''फिर भी, मन में कहीं यह विश्वास बना रहा कि कहानी और काहनी ही क्यों साहित्य की कोई भी विधा जब तक जनसाधारण के जीवन संघर्ष और आकांक्षाओं से नहीं जुड़ती, उसका कोई अर्थ नहीं होता है। मैं अकेला नही था इस तरह सोचने वाला। कितने ही और लेखक भी थे।''[13]

कामतानाथ का कथा संसार विशाल है जिसमें शहरी निम्नमध्यवर्ग की बहुआयमी अभिव्यक्ति हुई है। कहानी का विषय, पात्र, शिल्प, सभी कुछ निम्न मध्य वर्ग का कोना– कोना झांक आए हैं। शायद ही कोई पहलू ऐसा हो जहाँ कामतानाथ की कलम ना पहुँची हो। कामतानाथ का कथा साहित्य और निम्न मध्यवर्ग एक दूसरे का पर्याय बन गए है।

शहरी निम्नमध्यवर्ग के बिना कामतानाथ के साहित्य की कल्पना सम्भव नहीं है अंत में कहा जा सकता है कि कामतानाथ की कहानियां निम्न मध्य वर्ग का चेहरा बन कर उभरी है। निम्नमध्य वर्ग के प्रति आस्था, सरोकार और प्रतिबद्वता कामतानाथ के लेखन की विशेषता है। कामतानाथ की कहानियाँ निम्नमध्यवर्ग की स्थितियों विचार, समस्यांए, संघर्ष कुण्ठा ग्रस्त मानसिकता, घुटन इत्यादि अन्य विशेषताओं को समग्रता से पाठक के समक्ष प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. 'स्वाधीनता और उसके बाद' : पं0 जवाहर लाल नेहरू :पृ0 8
2. कामतानाथ से बातचीत के आधार पर
3. कहानी का वर्तमान परिदृश्य : वर्षादास :पृ0 67
4. समकालीन हिंदी कहानी : बलराम : पृ0 95
5. 'छुट्टियाँ– : कामतानाथ : पृ0– 10
6. 'छुट्टियाँ– : कामतानाथ : पृ0– 14
7. 'छुट्टियाँ– : कामतानाथ : पृ0– 46
8. 'छुट्टियाँ– : कामतानाथ : पृ0– 75
9. समकालीन हिंदी कहानी : बलराम : पृ0–98
10. तीसरी सॉस : कामतानाथ : पृ0 6
11. 'छुट्टियाँ– : कामतानाथ : पृ0– 37
12. सब ठीक हो जाएगा : कामतानाथ : पृ0 11

सब ठीक हो जाएगा : कामतानाथ : पृ0 17